

भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
लोक सभा
मौखिक प्रश्न संख्या : 406

गुरुवार, 21 अगस्त, 2025/30 श्रावण, 1947 (शक) को दिया जाने वाला उत्तर

उड़ान सेवा की आवृत्ति में कमी किया जाना

***406. श्री राजाभाऊ पराग प्रकाश वाजे:**

क्या नागर विमानन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या नासिक-दिल्ली मार्ग पर दैनिक उड़ान सेवा की आवृत्ति घटाकर सप्ताह में तीन दिन कर दी गई है और यदि हाँ, तो इसके क्या कारण हैं;

(ख) क्या वर्तमान में दिल्ली से नासिक तथा नासिक से दिल्ली के लिए सायंकाल में कोई उड़ान नहीं है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

ग) इस मार्ग के लिए आईजीआई विमानपत्तन पर रात्रि स्लॉट की स्वीकृति के लिए डीआईएल और एटीसी को शामिल करते हुए अंतर-एजेंसी मंजूरी में तेजी लाने और समन्वय स्थापित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जा रहे हैं; और

(घ) विशेषकर आगामी कुंभ मेले के दृष्टिगत नासिक विमानपत्तन पर बुनियादी ढांचे को बढ़ाने और नासिक से हवाई संपर्क सुविधा में सुधार करने के लिए किए गए/किए जाने वाले प्रस्तावित उपायों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर
नागर विमानन मंत्री (श्री किंजरापु राममोहन नायडू)

) क (से) घ (: विवरण सदन के पटल पर रखा गया है।

“उड़ान सेवा की आवृत्ति में कमी किया जाना” के संबंध में श्री राजाभाऊ पराग प्रकाश वाजे द्वारा पूछे गए दिनांक 27 अगस्त, 2025 के लोक सभा मौखिक प्रश्न संख्या 406 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में संदर्भित विवरण

(क) : नासिक-दिल्ली मार्ग, जिस पर पहले इंडिगो द्वारा दैनिक सेवा के रूप में परिचालन किया जा रहा था, दिल्ली हवाईअड्डे पर चल रहे कैट ~~999~~ उन्नयन निर्माण कार्यों के कारण इसे घटाकर सप्ताह में तीन दिन (मंगलवार, गुरुवार और शनिवार) कर दिया गया है।

(ख) से (घ) : किसी भी हवाईअड्डे पर, हवाईअड्डा प्रचालक द्वारा एयरलाइनों से प्राप्त अनुरोधों के आधार पर स्लॉट आवंटित किए जाते हैं। मार्च 1994 में वायु निगम अधिनियम के निरसन के साथ ही, भारतीय घरेलू विमानन नियंत्रणमुक्त हो गया है। एयरलाइनें किसी भी प्रकार के विमान के साथ क्षमता बढ़ाने और जिन बाजारों और नेटवर्कों में सेवा देना और परिचालन करना चाहती हैं उन्हें चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। इसलिए, यह एयरलाइन प्रचालकों पर निर्भर है कि वे अपनी परिचालन और वाणिज्यिक व्यवहार्यता के आधार पर देश के किसी भी हवाईअड्डे से/के लिए हवाई सेवाओं की शुरुआत या विस्तार पर विचार करें।

एचएएल के स्वामित्व और प्रचालन वाले नासिक हवाईअड्डे की पहचान, विकास और परिचालन के लिए उड़ान योजना के अंतर्गत बोली के पहले चरण के दौरान की गई थी। तदनुसार, हवाईअड्डे के विकास पर 11.19 करोड़ रुपये खर्च किए गए।

हवाईअड्डों का विस्तार और उन्नयन एक सतत प्रक्रिया है जो समय-समय पर भूमि की उपलब्धता, वाणिज्यिक व्यवहार्यता, सामाजिक-आर्थिक सरोकारों, यातायात की मांग/एयरलाइनों की ऐसे हवाईअड्डों से/तक परिचालन की इच्छा पर निर्भर करती है।
